साक्षात्कार

'आस पास' 10 वें वर्ष की सालगिरह पर

1. अविस्मरणीय घटना (7 जून 1992/ इस समय प्रातः को 5.10 बजे है। मेरा यह स्वप्न ठीक 5 बजे देखा गया है। मैं साईं बाबा के भक्तों के बीच बैठकर सबके साथ बाबा के प्रक्ट हाने की प्रार्थना कर रहा हूं।

'बाबा प्रकट होते हैं और मुझसे पूछते हैं, मैं क्या चाहता हूं इसके साथ ही वे अपनी परिचित शैली में मुझे चेतावनी भी देते हैं कि मैं अपनी पुस्तक के अनुमोदन की बात नहीं करूं क्योंकि अभी 'डाक्टर' उसका परीक्षण कर रहे हैं।

'वहां मौजूद अन्य भक्त बाबा से अनुरोध करते हैं कि वे पुस्तक का अनुमोदन करदें क्योंकि उसमें समयानुसार संशोधन किए जा सकते हैं। इस अनुरोध को स्वीकार करते हुए बाबा मुझसे पाण्डुलिपि मांगते हैं।

''यह पहली प्रति है ?''

''हां, बाबा''

''पहली प्रति स्वीकृत बाबा''

ठीक एक सप्ताह पश्चात डी.के. पब्लिशर्स दिल्ली का मुझे पत्र प्राप्त हुआ जिसमें मेरी पुस्तक 'गीता फार आल' के प्रकाशन पर 'एडीटोरियल बोर्ड' की टिप्पणियों के साथ सहमति की गई थी।

2. कृति जिसने झंकृत किया जो हाल में ही मैंने नील डोनाल्ड वाल्शकी वेस्ट सेलर्स 'व्हाट गॉड वान्टस' पूरी की है। किताब के शुरू के 12 अध्यायों में लेखक यह बताते हैं। कि ईश्वर यह नहीं चाहता, यह नहीं चाहता है। ईश्वर क्या चाहता है, यह बात तेरवें चेप्टर में बताई गई है। किन्तु यह पूरा का पूरा तीन पन्ने एकदम खाली हैं अर्थात् ईश्वर वास्तव में हमसे कुछ नहीं चाहता है।

शायद मैं यहा यह कहना चाहूंगा कि ऐसी किताब जो लिखी नहीं गई है, लिखी जा रही है किन्तु लिखी न जा पायेगी, मेरी प्रिय किताब है।

3. लेखन की शुरूआत –

वर्ष 1961 के कक्षा 9 के विद्यार्थी ने अपने गांव (बर्माडांग जिला, टीकमगढ़) के स्कूल के अहाते पर मुग्ध होते हुए लिखा –

किन्तु बडी थी पुण्यमयी
ओ पुहुमि, धन्य गौरवशाली
पाकर तुझ श्रेष्ठ अवनितल को
है हुआ ग्राम समृद्धिशाली

4. आप लेखक न होते तो क्या होते?

ज्योतिषाचार्य, संस्कृतज्ञ

5. आपने उपनाम क्यों नहीं रखा?

शायद ठीक–ठीक मिला नहीं। इसलिए भी नहीं कि अनाम लम्बे जीवन की छोटी पहचान के लिए छोड़ा गया एक नाम ही काफी है।

– क्या लिख रहे हैं?

'संसार है घर ईश्वर का' ईशावास्योपनिषद् पर विचारात्मक पुस्तक/अध्ययन भी फिलहाल इसी भाव भूमिका में केन्द्रित है।

– प्रभु दयाल मिश्र